हकीकत मारफत का बेवरा

सोई कहूं हकीकत मारफत, जो रखी थी गुझ रसूल।
वास्ते अर्स रूहन के, जिन जावें आखिर भूल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं उस हकीकत और मारफत के ज्ञान को जाहिर करती हूं जो रसूल साहब ने हकीकत के गुप्त रखे और मारफत के लिखे ही नहीं। वह अब परमधाम की रूहों के वास्ते मैं जाहिर करती हूं, ताकि वह आखिरत को भूल न जाएं।

फिरके बनी असराईल, हुए पीछे मूसा महत्तर।
एक नाजी नारी सत्तर, कहे फुरमान यों कर।। २ ।।

असराईल के बेटे मूसा पैगम्बर के सत्तर नारी और एक नाजी फिरके का ज्ञान कुरान में लिखा है।

याही भांत ईसा के, फिरके बहत्तर कहे।
एक नाजी तिन में हुआ, और नारी इकहत्तर भए।। ३ ।।

इसी तरह से ईसा पैगम्बर के बहत्तर फिरकों का बयान है, जिसमें एक नाजी मर्द मोमिनों का और इकत्तर दोजखी फिरके बताए हैं।

तेहत्तर फिरके कहे महंमद के, बहत्तर नारी एक नाजी।
नारी जलसी आग में, नाजी हिदायत हक की।। ४ ।।

रसूल मुहम्मद के इसी तरह तेहत्तर फिरके हुए हैं, जिनमें बहत्तर दोजखी और एक मर्द मोमिनों का है। नारी फिरके दोजख की आग में जलेंगे। नाजी फिरके को श्री राजजी महाराज की कृपा से जागृत बुद्धि का ज्ञान प्राप्त होगा।

जाहेर पेहेचान है तिन की, ले चलत माएने बातन।
कौल फैल चाल रूह नजर, इनों असल बका अर्स तन।। ५ ।।

मोमिनों की जाहिरी पहचान यही है कि वह कुरान के शब्दों के बातूनी माएने खोलेंगे। इनकी कहनी, करनी, रहनी और रूह की नजर सब परमधाम की होगी, क्योंकि इनके मूल तन परमधाम में हैं।

फुरमान आया जिन पर, ए सोई जानें इसारत।
ले मारफत बैठे अर्स में, बीच बका खिलवत।। ६ ।।

कुरान का ज्ञान जिनके वास्ते आया है, वही इसकी इशारतों को समझते हैं। वह यह मारफत का ज्ञान लेकर ऐसा अनुभव करते हैं, जैसे वह मूल-मिलावा परमधाम में बैठे हों।

ए इलम कहे खेल उड़ जावे, बका कंकरी के देखे।
तो अर्स रूहों की नजरों, ख्वाब रेहेवे क्यों ए।। ७ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान बताता है कि अखण्ड परमधाम की एक कंकरी के सामने यह संसार खत्म हो जाता है, तो फिर परमधाम की रूहों की नजर के सामने यह संसार कैसे रह सकता है?

तो मोमिन तन में हुकम, फैल करे लिए रूह हुज्जत।
वास्ते हादी रूहन के, ए हकें करी हिकमत।। ८ ।।

मोमिनों के तनों में श्री राजजी का हुकम ही मोमिनों के नाम से सब काम करता है। श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामा महारानी और रूहों के वास्ते ऐसी हिकमत कर रखी है।

Nijanand App

तो कह्या अर्स दिल मोमिन, ना मोमिन जुदे अर्स से।
पर ए जानें अरवाहें अर्स की, जो करी बेसक हक इलमें।। ९ ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, क्योंकि वह परमधाम से अलग नहीं है, परन्तु इसे परमधाम की रूहें ही जान सकती हैं, जो जागृत बुद्धि के ज्ञान से जाग गई हैं।

बसरी मलकी और हकी, तीन सूरत महंमद की जे।
ए तीनों सूरत दे साहेदी, आखिर अर्स देखावें ए।। १० ।।

बसरी, मलकी, हकी मुहम्मद साहब की तीन सूरतें कही हैं। यह तीनों सूरतें गवाही देकर आखिरत में परमधाम का दर्शन करा देंगी।

रूहों हक अर्स नजरों, हुकम नजर खेल माहें।
अर्स नजीक रूहों को खेल से, इत धोखा जरा नाहें।। ११ ।।

रूहों की नजर परमधाम और श्री राजजी के चरणों में है। हुकम की नजर खेल में है इसलिए रूहों को परमधाम नजदीक है। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

तो हक सेहेरग से नजीक, कोई जाने ना लदुन्नी बिन।
एही लिख्या फुरमान में, यों ही रूहअल्ला कहे वचन।। १२ ।।

इसलिए मोमिनों को खुदा सेहेरग से नजदीक कहा है, जिसे जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना कोई समझ नहीं पाता। ऐसा ही कुरान में लिखा है और ऐसा ही श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने भी कहा।

ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर।
यों करते छूट्या खेल नजरों, तो रूहें कदमै तले हजूर।। १३ ।।

जैसे-जैसे परमधाम नजदीक होता जाता है, वैसे-वैसे खेल दूर होता जाता है। ऐसा करते-करते संसार रूहों से छूट जाएगा और श्री राजजी के चरणों में जागृत होकर मोमिन उठ बैठेंगे।

नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अर्स नजीक नजर।
यों करते लैल मिटी रूहों, दिन हुआ अर्स फजर।। १४ ।।

जैसे-जैसे नजर खेल से हटती जाती है, वैसे-वैसे परमधाम नजदीक दिखाई पड़ता है। इस तरह से रूह की रात्रि (फरामोशी) समाप्त हो जाती है और परमधाम के ज्ञान से दिन हो जाता है। अज्ञानता का परदा हट जाता है।

ए जो देत देखाई वजूद, रूह मोमिन बीच नासूत।
ए दुनी जाने इत बोलत, ए बैठे बोलें माहें लाहूत।। १५ ।।

रूह मोमिनों के जो तन संसार में दिखाई देते हैं, तो दुनियां समझती है यह तन ही मोमिन हैं, परन्तु हकीकत में वह परमधाम में बैठे ही बोल रहे हैं।

तो बातून गुझ लाहूत का, जाहेर सब करत।
ना तो अर्स बका की रोसनी, क्यों होवे जाहेर इत।। १६ ।।

इसलिए मोमिन परमधाम की छिपी बातों को यहां जाहिर करते हैं, वरना अखण्ड परमधाम का ज्ञान यहां कैसे जाहिर हो?

Nijanand App

अर्स बका हमेसगी, हक हादी रूहें वाहेदत।
ए तीन खेल हुए जो लैल में, ऐसा हुआ न कोई कबूं कित।। १७ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजश्यामाजी और रूहें हमेशा से ही एक दिल हैं। यह तीन खेल (बृज, रास और जागनी के) जो रूहों की फरामोशी (रात्रि) में हुए हैं, ऐसे पहले कभी नहीं हुए थे।

तो खाकीबुत कायम किए, जो किया वास्ते खेल उमत।
रूहों पट दे बका बुलाए के, दई चौदे तबकों भिस्त।। १८ ।।

इन झूठे जीवों को अखण्ड किया है। मोमिनों ने खेल देखा है, इसलिए इनको अखण्ड किया है। रूहों को पहले फरामोशी देकर खेल दिखाया। फिर वापस परमधाम बुलाकर दुनियां को अखण्ड मुक्ति दी। वह भी मोमिनों के खेल में आने के कारण।

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते।। १९ ।।

अब दुनियां जो बहिश्तों में कायम होगी, सब मोमिनों की सिफत गाएंगे। श्री राजश्यामाजी और रूहें सब एक दिल हैं। इनके कारण ही सब दुनियां को बहिश्तों में कायमी मिलेगी।

अर्स रूहें हक बिना न रहें, विरहा न सहें एक खिन।
जब इलमें हुई अर्स बेसकी, रूहें रहें न बिना वतन।। २० ।।

परमधाम की रूहें श्री राजजी महाराज के बिना एक क्षण नहीं रह सकतीं। और न उनका वियोग ही सहन कर सकती हैं। जब जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की पूरी पहचान हो गई तो घर के बिना रूहें संसार में नहीं रह सकतीं।

जो कदी मोमिन तन में हुकम, तो हुकम भी रहे ना इत।
क्यों ना रहे इत हुकम, हुकम हुकम बिना क्यों फिरत।। २१ ।।

यदि यह माना जाए कि मोमिनों के तन में श्री राजजी का हुकम है, तो फिर हुकम भी घर की पहचान हो जाने पर यहां नहीं रह सकता है, परन्तु हुकम भी क्या करे जब तक दूसरा हुकम न मिल जाए, तो वह भी वापस नहीं जा सकता।

हुकम आया तन मोमिनों, लई अर्स रूह हुज्जत।
ले इत लज्जत अर्स हक की, क्यों हुकम रेहे सकत।। २२ ।।

संसार में मोमिनों का नाम लेकर हुकम तन धारण करके बैठा है। संसार में श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम का आनन्द लेकर वह हुकम भी संसार में कैसे रह सकता है?

ए हुकम सो भी मासूक का, सो क्यों जुदागी सहे।
खिलवत वाहेदत सुध सुन, पल एक ना रहे।। २३ ।।

यह हुकम भी हमारे माशूक श्री राजजी महाराज का है, इसलिए जुदाई सहन नहीं कर सकता, वह मूल-मिलावा की एक दिली का ज्ञान सुनकर एक क्षण भी यहां नहीं रह सकता।

ए हुकम तिन मासूक का, जो आप उलट हुआ आसिक।
सो हुकम विरहा ना सहे, बिना मासूक एक पलक।। २४ ।।

यह हुकम माशूक श्री राजजी का है, जो खेल में आकर उलटे आशिक बन गए, इसलिए श्री राजजी का हुकम भी एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज का वियोग सहन नहीं कर सकता।

Nijanand App

ए अर्स बका बातें सुन के, एक पलक न रहें अरवाहें।
रूहों हुकम राखे आड़ा पट दे, हक इत लज्जत देखाया चाहें।। २५ ।।

अखण्ड घर की बातें सुनकर मोमिन एक पल के लिए भी नहीं रह सकते, परन्तु हुकम का परदा आड़े देकर श्री राजजी महाराज खेल दिखा रहे हैं।

रूहों हक पे मांगी लज्जत, सो क्यों रहें देखे बिगर।
कोट गुनी देखावें लज्जत, जो रूहों मांगी प्यार कर।। २६ ।।

रूहों ने श्री राजजी महाराज से खेल की लज्जत मांगी थी, तो वह खेल देखे बिना कैसे रह सकती हैं। रूहों ने प्यार से जो खेल मांगा था, धनी उससे करोड़ गुना लज्जत दिखा रहे हैं।

ना तो इस्क इनों का असल, सब अंगों इस्क रूहन।
इस्क उड़ावे अंग लज्जत, आया इलम वास्ते इन।। २७ ।।

मोमिनों का इश्क असल अंग का है। अंग भी इश्क के हैं। यह इश्क संसार को छुड़ा देने वाला है, इसलिए जागृत बुद्धि इनके वास्ते आई है।

हक को काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत।
ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, तो मांग्या क्यों न पावत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज को अपनी रूहों को लाड़-लज्जत देने के सिवाय और कोई काम नहीं है। श्री राजजी महाराज तो बिना मांगने पर ही सुख देते हैं, तो मांगने पर क्यों नहीं मिलेगा?

सुख उपजें कई विध के, आगूं अर्स में बड़ा विस्तार।
सो रूहें सब इत देखहीं, जो कर देखें नीके विचार।। २९ ।।

इससे आगे परमधाम में कई तरह के बहुत बड़े सुख मिलेंगे। यह सब रूहें अच्छी तरह से विचार करके संसार में बैठकर देख लेंगी।

सो बिगर कहे सुख देत हैं, ए तो रूहों मांग्या मिल कर।
इन जिमी बैठाए सुख अर्स के, हक देत हैं उपरा ऊपर।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज तो बिना कहे सुख देते हैं और यह तो सब रूहों ने मिलकर खेल मांगा है, इसलिए इस जमीन में बिठाकर भी ऊपर से परमधाम के सुख देते हैं।

दुनी में बैठाए न्यारे दुनी से, किए ऐसी जुगत बनाए।
सुख दिए दोऊ ठौर के, अर्स दुनी बीच बैठाए।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुछ ऐसी हिकमत कर रखी है कि मोमिनों को दुनियां में बिठाया भी और अलग भी कर रखा है। इस तरह से दुनियां में बिठाकर संसार के तथा परमधाम के सुख दिखा रहे हैं।

एक तन हमारा लाहूत में, नासूत में और तन।
असल तन रूहें अर्स बीच में, तन नासूत में आया इजन।। ३२ ।।

हमारा एक तन परमधाम में है, दूसरा संसार में। हमारे असल तन परमधाम में हैं और मृत्युलोक में श्री राजजी का हुकम हमारे नाम से तन धारण कर लीला कर रहा है।

Nijanand App

अर्स तन देखें तन नासूती, तन नासूत में जो हुकम।
सो सुध दई अर्स अरवाहों को, इने सेहेरग से नजीक हम।। ३३ ।।

हमारे परमधाम के तन हमारे प्रतिबिम्ब इस तन को देख रहे हैं, जिनमें श्री राजजी का हुकम बैठकर लीला कर रहा है, इसलिए परमधाम की अरवाहों (रूहों) को श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सेहेरग से नजदीक बताया है।

दुनियां चौदे तबक में, किन पाई न बका तरफ।
तिन अर्स में बैठाए हमको, जाको किन कह्यो ना एक हरफ।। ३४ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में अखण्ड घर का कोई एक अक्षर भी नहीं बोल सका। ऐसे अखण्ड घर में हमें बिठा दिया।

जो जाहेर माएने देखिए, तो बीच पड़यो ब्रह्मांड।
एता बिछोड़ा कर दिया, हक अर्स और इन पिंड।। ३५ ।।

यदि जाहिर माएनों से देखें तो आतम और परआतम में वजूद का परदा है। श्री राजजी महाराज ने परमधाम के तनों और संसार के तनों में इतना फर्क कर रखा है।

हुआ बिछोड़ा बीच ब्रह्मांड के, एते पड़े थे हम दूर।
सो हकें इलम ऐसा दिया, बैठे कदमों तले हजूर।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज से बिछुड़कर हम इतने दूर ब्रह्माण्ड में आ गए, परन्तु श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान ने हमें इतना नजदीक कर दिया, लगता है कि हम श्री राजजी के चरणों में बैठे हैं।

हुकमें कई मता पोहोंचाईया, बीच ऐसी जुदागी में।
हकें न्यामत दे अघाए, कई हांसी करियां हम सें।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज की ऐसी जुदाईगी में हुकम ने कई न्यामतें हम रूहों के पास पहुंचाईं और इस तरह से श्री राजजी महाराज ने अपनी सब न्यामतें देकर अपनी इच्छा पूरी कर ली और इस तरह से हम रूहों से कई प्रकार की हंसी की है।

अर्स–अजीम की कंकरी, उड़ावे चौदे तबक।
तो तिन को है क्यों कहिए, जो देख ना सके हक।। ३८ ।।

अर्श-ए-अजीम की एक कंकरी चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड को उड़ा देती है। जो सत को देख ही नहीं सकता है, उसे सत कैसे कहा जाए?

जो हक को देखे ना उड़े, सो दूजा कहिए क्यों कर।
ए बातें अर्स वाहेदत की, पाइए हक इलमें खबर।। ३९ ।।

जो श्री राजजी महाराज को देखकर समाप्त न हो, उसे श्री राजजी महाराज से अलग कैसे मानें? यह परमधाम की एकदिली की बातें हैं, जिनकी पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही मिलती है।

हकें इलम दिया अपना, सो आया इस्क बखत।
सो इस्क न देवे बढ़ने, ऐसे किए हिरदे सखत।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है, जिससे इश्क लेने का समय आ गया है, परन्तु हमारा दिल इतना कठोर हो गया है कि दिल इश्क को बढ़ने ही नहीं देता।

Nijanand App

और जित आया हक इलम, अर्स दिल कह्या सोए।
हक न आवें इस्क बिना, और हक बिना इस्क न होए।। ४१ ।।

जहां श्री राजजी महाराज का इलम आ गया, उनका दिल अर्श बन गया। बिना इश्क के श्री राजजी महाराज नहीं आते और बिना श्री राजजी महाराज के इश्क नहीं आता।

अर्स कहिए दिल तिन का, जित है हक सहूर।
इलम इस्क दोऊ हक के, दोऊ हक रोसनी नूर।। ४२ ।।

उनके दिल को ही श्री राजजी का अर्श कहना चाहिए, जिनको जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया है। इलम और इश्क दोनों ही श्री राजजी महाराज के हैं और दोनों से ही उनकी पहचान होती है।

इस्क इलम बारीकियां, दिल जाने अर्स मोमिन।
जो जागी होए रूह हुकमें, ताए लज्जत आवे अर्स तन।। ४३ ।।

इश्क और इलम की बारीक बातें मोमिनों के दिल ही जानते हैं, इसलिए जो रूह श्री राजजी के हुकम से जागृत हो गई हो, उसे अपनी परआतम के आनन्द मिलते हैं।

जो जोरा करे इस्क, तन मोमिन देवे उड़ाए।
दिल सखती बिना अर्स अजीम की, इत लज्जत लई न जाए।। ४४ ।।

यदि मोमिनों के तन में इश्क जोर लगाए तो यह नश्वर तन समाप्त हो जाएगा। बिना दिल को सख्त किए परमधाम की लज्जत यहां नहीं मिल सकती।

इस्क नूर–जमाल बिना, और जरा न कछुए चाहे।
इस्क लज्जत ना सुख दुख, देवे वाहेदत बीच डुबाए।। ४५ ।।

इश्क श्री राजजी महाराज के बिना किसी और को नहीं चाहता। इश्क की लज्जत के सामने दुःख-सुख कुछ भी नहीं हैं और इश्क ही श्री राजजी महाराज की एकदिली में गर्क कर देता है।

ना तो सखत दिल मोमिन के, हक करें क्यों कर।
पर अर्स लज्जत बीच दुनी के, लिवाए न सखती बिगर।। ४६ ।।

वरना मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज कठोर क्यों बनाएं? पर दिल को सख्त किए बिना (दुनियां से तोड़े बिना) परमधाम की लज्जत दुनियां में नहीं मिल सकती।

एकै नजर मोमिन की, हक सुख दिया चाहें दोए।
रूहें अर्स सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अर्स में होए।। ४७ ।।

मोमिनों की एक ही चाह परमधाम में सुख लेने की है, परन्तु श्री राजजी महाराज दोनों सुख देना चाहते हैं। रूहें परमधाम का सुख खेल में अनुभव करें और फिर खेल के सुख परमधाम में लें।

हकें दई जुदागी हमको, इस्क बेवरे को।
बिना जुदागी बेवरा, पाइए ना अर्स मों।। ४८ ।।

इश्क के ब्यौरे (विवरण) के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने हमको जुदाई दी है, क्योंकि बिना जुदाई के परमधाम में इश्क का विवरण हो नहीं सकता था।

Nijanand App

होए न जुदागी अर्स में, तो क्यों पाइए बेवरा इस्क।
ताथें दई नेक फरामोसी, बीच अर्स के हक।।४९।।

परमधाम में जुदाई होती नहीं, तो इश्क का विवरण कैसे हो? इसलिए श्री राजजी महाराज ने परमधाम में जरा सी फरामोशी दी है।

हम खेल देखें बैठे अर्स में, ए जो चौदे तबक।
रूह हमारी इत है नहीं, लई परदे में हक।।५०।।

हम परमधाम में बैठे-बेठे ही चौदह तबकों के खेल को देख रहे हैं। हमारी परआतम यहां नहीं है। श्री राजजी महाराज ने उसे फरामोशी के परदे में रखा है।

फेर दिया इलम अपना, जासों फरामोसी उड़ जाए।
खेल में मता सब अर्स का, इलमें सब विध दई बताए।।५१।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया, जिससे फरामोशी समाप्त हो जाए। खेल के बीच में परमधाम की सारी न्यामतें श्री राजजी के इलम ने बता दी हैं।

जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर।
याको उड़ावे अर्स कंकरी, झूठ क्यों रहे रूहों नजर।।५२।।

यदि हमारी परआतम संसार में आती, तो संसार कैसे खड़ा रहता? परमधाम की एक कंकरी के सामने झूठा संसार नहीं रहता, तो रूहों की नजर के सामने कैसे रहता?

देखत है दिल खेल को, लिए अर्स रूह हुज्जत।
फुरमान आया इनों पर, और इलम आया न्यामत।।५३।।

रूहों के दिल परआतम के नाम से खेल को देख रहे हैं। इनके वास्ते ही कुरान आया, जागृत बुद्धि का ज्ञान आया। परमधाम की सब न्यामतें आईं।

या विध करी जो साहेब ने, हम हुए दोऊ के दरम्यान।
सुध अर्स नासूत की, दोऊ हमको देवें सुभान।।५४।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज ने हमारी आतम और परआतम में फर्क डाल रखा है। श्री राजजी महाराज हमको अखण्ड घर के और मृत्युलोक दोनों के सुख देते हैं।

हुकम तन बीच नासूत, हम फरामोस अर्स तन।
नासूत देखें हम नजरों, अर्सें पोहोंचे ना दृष्ट मन।।५५।।

हमारे मूल तन परमधाम में फरामोशी में हैं और मृत्युलोक में हमारे तन में हुकम बैठा है। मृत्युलोक को हम नजर से देखते हैं। यहां की नजर और मन परमधाम नहीं पहुंचता।

बोले हुकम दावा ले रूहन, बीच तन नासूत।
ले सब सुध अर्स इलमें, देत दुनी में लज्जत लाहूत।।५६।।

यहां संसार में हुकम ही मोमिनों के नाम से बोलता है और परमधाम के ज्ञान से सब सुख लेता है। इस तरह से श्री राजजी महाराज परमधाम की सारी लज्जत मोमिनों को दुनियां में दे रहे हैं।

Nijanand App

खिलवत निसबत वाहेदत, जेती अर्स हकीकत।
ए लज्जत हुकम सिर लेवहीं, अर्स रूहें सिर ले हुज्जत।।५७।।

परमधाम की (मूल-मिलावा की) अंगना होने की, एक दिली की, जो कुछ भी हकीकत है, वह श्री राजजी महाराज का हुकम रूहों के नाम से लज्जत ले रहा है।

यों हुकम नूरजमाल का, अर्स सुख देत रूहों इत।
चुन चुन न्यामत हक की, रूहों हुकम पोहोंचावत।।५८।।

इस तरह से नूरजमाल श्री राजजी का हुकम परमधाम की रूहों को यहां सुख देता है और परमधाम की सब न्यामतें चुन-चुन करके रूहों के पास पहुंचाता है।

कई सुख लें हक के खेल में, फेर हुकम पोहोंचावे खिलवत।
कई अनहोंनी कर सुख दिए, हुकमें जान हक निसबत।।५९।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज के कई तरह के सुख खेल में मोमिनों को मिलते हैं और फिर हुकम मूल-मिलावा की पहचान कराता है। श्री राजजी महाराज ने हमें अपनी अंगना जानकर ही कई अनहोनी बातें करके सुख दिए हैं।

कई विध के सुख हुकमें, दोऊ तरफों आड़ा पट दे।
अर्स दुनी बीच रूहों को, दिए सुख दोऊ तरफों के।।६०।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमें कई तरह के सुख, हमारी आतम और परआतम के बीच तन का परदा डालकर, संसार के सुख तथा परमधाम के सुख दिये हैं।

ए झूठ न आवे अर्स में, ना कछू रहे रूहों नजर।
ताथें दोऊ काम इन विध, हकें किए हिकमत कर।।६१।।

इस झूठे संसार में कोई चीज आ नहीं सकती और रूहों की नजर के सामने झूठा संसार रह नहीं सकता। श्री राजजी महाराज ने यह दोनों काम बड़ी हिकमत कर हमें दिखाए।

जेती अरवाहें अर्स की, हक सेहेरग से नजीक तिन।
दे कुंजी अर्स पट खोलिया, हादिएं किए सब रोसन।।६२।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं, श्री राजजी महाराज उनके सेहेरग से नजदीक हैं। श्री श्यामा महारानीजी ने तारतम ज्ञान की कुंजी से परमधाम की सब तरह से पहचान करा दी है।

इलम लदुन्नी पाए के, अर्स रूहें हुई बेसक।
जगाए खड़े किए अर्स में, बीच खिलवत खासी हक।।६३।।

जागृत बुद्धि की वाणी से रूहों के संशय मिट गए और परमधाम मूल-मिलावा में श्री राजजी के सामने जागृत हो गईं।

या तो खड़ी रहे रूह खिलवतें, या तो देवे तवाफ।
हौज जोए या अर्स में, तूं इन विध हो रहे साफ।।६४।।

अब या तो रूहें परमधाम के मूल-मिलावा में ध्यान मग्न रहती हैं या फिर परमधाम के पच्चीस पक्षों का चितवन करती हैं। हौज कौसर, जमुनाजी या परमधाम में इस तरह से घूमती हैं कि संसार से अलग रहती हैं।

Nijanand App

पाक पानी से न होइए, ना कोई और उपाए।
होए पाक मदत तौहीद की, हकें लिख भेज्या बनाए।। ६५ ।।

यहां के पानी से नहाने से कोई पाक नहीं होता और यहां कोई उपाय है ही नहीं। श्री राजजी महाराज की मेहर हो, मदद हो, तभी रूह संसार से पाक-साफ हो सकती है। ऐसा श्री राजजी महाराज ने लिख भेजा है।

फेर फेर हक अंग देखिए, ज्यों याद आवे निसबत।
है अनुभव तो एक अंग का, जो हमेसा वाहेदत।। ६६ ।।

जैसे-जैसे अपनी अंगना होने का सम्बन्ध याद आता है, तैसे-तैसे बार-बार श्री राजजी महाराज के अंग देखने की चाहना होती है। हमें तो परमधाम की एकदिली का अनुभव है और वही हमारी वाहेदत (एकदिली) है।

ताथें तूं चेत रूह अर्स की, ग्रहे अपने हक के अंग।
रहो रात दिन सोहोबत में, हक खिलवत सेवा संग।। ६७ ।।

हे मेरी आत्मा! तू जागृत होकर परमधाम में अपने श्री राजजी महाराज के स्वरूप को ग्रहण कर और रात-दिन उनके साथ ही सेवा में मूल-मिलावा में रहकर अनुभव कर।

जो खावंद अर्स अजीम का, ए हक नूरजमाल।
आए तले झरोखे झांकत, दीदार को नूरजलाल।। ६८ ।।

अर्शे-अजीम (परमधाम) के मालिक श्री राजजी महाराज हैं, जिनके दर्शन अक्षरब्रह्म तीसरी भोम के झरोखे के सामने नीचे चांदनी चौक में आकर करते हैं।

जाके पलथें पैदा फना, कई दुनी जिमी आसमान।
सो आवत दायम दीदार को, ऐसा खावंद नूर–मकान।। ६९ ।।

इस अक्षरब्रह्म के एक पल में ऐसे दुनियां के कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। ऐसे अक्षरब्रह्म अक्षरधाम से प्रतिदिन श्री राजजी महाराज के दर्शन को आते हैं।

तिन चाह्या दीदार रूहन का, जो रूहें बीच बड़ी दरगाह।
ए मरातबा मोमिनों, जिन वास्ते हुकम हुआ।। ७० ।।

इस अक्षरब्रह्म ने परमधाम (रंग महल) में रहने वाली रूहों के दर्शन की चाहना की। मोमिनों की साहेबी के लिए ही श्री राजजी महाराज का हुकम हुआ।

देख देख मैं देखया, ए सब करत हक हुकम।
ना तो अर्स दिल एता मता लेय के, खिन रहे न बिना कदम।। ७१ ।।

मैंने देख-देखकर विचार किया कि श्री राजजी महाराज का हुकम ही यह सब कुछ करता है वरना मोमिनों के अर्श दिल में इतनी न्यामतें आने पर श्री राजजी के चरणों के बिना एक क्षण भी रहना सम्भव नहीं है।

Nijanand App

हकें अर्स लिख्या मेरे दिल को, क्यों रहे रूह सुन सुकन।
एक दम ना रहे बिना कदम, पर रूहों ठौर बैठा हक इजन।।७२ ।।

श्री राजजी ने मेरे दिल को अर्श किया है। ऐसे वचनों को सुनकर रूह कैसे रहे? रूह एक क्षण भी श्री राजजी के चरणों के बिना नहीं रह सकती, पर क्या करें? रूहों की जगह पर श्री राजजी का हुकम बैठा है।

हुकम कहे सो हुकमें, अर्स बानी बोले हुकम।
रूहों दिल हुकम क्यों रेहे सके, ए तो बैठी तले कदम।।७३ ।।

अब हुकम ही कहने वाला है और हुकम ही सुनने वाला है। परमधाम की वाणी बोलने वाला भी परमधाम का हुकम ही है। अब रूहें जो श्री राजजी के चरणों तले बैठी हैं, उनके दिल में श्री राजजी का हुकम कैसे रह सकता है?

खेल तन में हुकम ना रेहे सके, हुज्जत लिए रूहन।
हुकम हमारे खसम का, क्यों देवे दाग मोमिन।।७४ ।।

मोमिनों के संसार के तन में मोमिनों के नाम से हुकम नहीं रह सकता। हुकम हमारे धनी का है, इसलिए हमको दाग नहीं लगने देगा।

पर हक अर्स लज्जत तो पाइए, बैठे मांग्या खेल में जे।
सो हुकमें मांग्या दे हुकम, हकें करी वास्ते हांसी के।।७५ ।।

पर श्री राजजी महाराज के चरणों का सुख और आराम तो तब मिले जब हम खेल में बैठकर मांगते हैं। अब हुकम ही मंगवाता है और देने वाला भी हुकम ही है। यह तो श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते किया है।

ए बातें होसी सब अर्स में, हंस हंस पड़सी सब।
ए हुकमें करी कई हिकमतें, सब वास्ते हमारे रब।।७६ ।।

जब यह सब बातें परमधाम में होंगी, तब हम हंस-हंसकर गिरेंगे। हुकम ने इस तरह से हमारे धनी के वास्ते कई तरह की हिकमतें कर रखी हैं।

हक मुख हुकमें देख हीं, हुकम देखावे खेल।
हुकम देवे सुख लदुन्नी, हुकम करावे इस्क केलि।।७७ ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द भी हुकम से देख पाएंगे। यह हुकम ही खेल दिखाता है। हुकम ही जागृत बुद्धि की वाणी से सुख देता है। हुकम ही हमें इश्क का खेल खेलाता है।

हुकमें जोस गलबा करे, हुकमें जोर बढ़े इस्क।
हुकमें इलम रखे सुख को, हुकम प्याले पिलावे माफक।।७८ ।।

हुकम से जोश छा जाता है और हुकम से इश्क की ताकत बढ़ती है। हुकम से ही इलम द्वारा सुख मिलते हैं और हुकम से ही श्री राजजी महाराज इश्क के प्याले पिलाते हैं।

हुकम बेहोस ना करे, हुकम जरा जरा दे लज्जत।
हुकम पनाह करे सब रूहन, हुकमें जानी जात निसबत।।७९ ।।

हुकम बेहोश नहीं करता, थोड़ा-थोड़ा मस्त बनाता है। हुकम ही रूहों को श्री राजजी की शरण में लेता है और हुकम से ही, रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, ऐसी पहचान होती है।

Nijanand App

प्याला हुकम पिलावहीं, करें हुकम रखोपा ताए।
ना तो इन प्याले की बोए से, तबहीं अरवा उड़ जाए।। ८० ।।

हुकम ही इश्क के प्याले पिलाता है और हुकम ही उनकी रक्षा करता है, वरना इश्क के प्याले की खुशबू से ही अरवाह (रूह) उड़ जाती।

ए प्याला कबूं किन ना पिआ, हम रूहें आइयां तीन बेर।
ए प्याले पेहेले तो पिए, जो हम थे बीच अंधेर।। ८१ ।।

इस इश्क के प्याले को आज दिन तक किसी ने नहीं पीया। हम रूहें इस संसार में बृज, रास और जागनी में तीन बार आई हैं। हमने जो इश्क के प्याले (बृज में) पिए, उस समय हमें अज्ञानता थी। घर की खबर नहीं थी।

ए प्याले पिए जाए क्यों जागतें, तन तब हीं जाए चिराए।
बोए भी ना सेहे सके, तो प्याला क्यों पिआ जाए।। ८२ ।।

अब जागृत अवस्था में इश्क के प्याले पीने पर तन को तुरन्त ही फट जाना चाहिए। अब तो इश्क की खुशबू भी सहन नहीं कर सकते, तो प्याला कैसे पीया जाएगा?

हुकम जो प्याला देवहीं, सो संजमें संजमें पिलाए।
पूरी मस्ती न हुकम देवहीं, जानें जिन कांच सीसा फूट जाए।। ८३ ।।

अब हुकम जो इश्क का प्याला देता है, वह धीरे-धीरे रूहों को पिलाता है। हुकम पूरी मस्ती नहीं दे रहा है। यह जानकर कि कांच का शीशा जैसे टूट जाता है, ऐसे ही रूहें कहीं शरीर न छोड़ दें?

ना तो ए प्याला पीय के, ए कच्चा वजूद न रख्या किन।
पर हुकम राखत जोरावरी, प्याला पिलावे रखे जतन।। ८४ ।।

वरना यह इश्क का प्याला पीकर यह झूठा वजूद किसी ने नहीं रखा, परन्तु हुकम अपनी ताकत से बड़े यत्न से इश्क का प्याला पिलाता है।

हुकम मेहेर बारीकियां, ए मैं कहूं बिध किन।
नजर हमारी एक बिध की, सब बिध सुध ना रूहन।। ८५ ।।

हुकम और मेहर की बारीक (खास) बातें मैं कैसे कहूं, क्योंकि हमारी नजर एक ही तरह की है। सब तरह की सुध रूहों को नहीं है।

हुकम देवे लज्जत, प्याला जेता पिआ जाए।
हर रूहों जतन करें कई बिध, जानें जिन प्याला देवे गिराए।। ८६ ।।

रूहों से जितना इश्क का प्याला पिया जाता है, हुकम उतनी ही लज्जत देता है और हुकम ही हर रूह के साथ कई तरह के उपाय करके इश्क देता है, ताकि रूह प्याले को गिरा न दे।

जिन जेता हजम होवहीं, ज्यों होए नहीं बेहोस।
तब हीं फूटे कुप्पा कांच का, पाव प्याले के जोस।। ८७ ।।

जिन रूहों को जितना इश्क हजम हो सकता है, जिससे वह बेहोश न हों, हुकम उतना ही इश्क देता है। नहीं तो इश्क के चौथाई प्याले से ही मोमिनों का यह तन कांच के कप (प्याले) की तरह टूट जाएगा।

Nijanand App

सही जाए न बोए जिनकी, सो क्यों सकिए मुख लगाए।
सो पैदरपे क्यों पी सके, पर हुकम करत पनाह।। ८८ ।।

जिस इश्क की खुशबू भी सही नहीं जा सकती, उससे भरे प्याले को मुख से कैसे लगाएं? उसे लगातार कैसे पिया जा सकता है? पर हुकम ही यह सब कुछ शरण में रखकर करता है।

ए अंग लगे प्याला जिनके, सब खलड़ी जाए उतर।
ना तो ए प्याला हजम क्यों होवहीं, पर हक राखत पनाह नजर।। ८९ ।।

जिस किसी मोमिन के अंग को प्याला छू जाए, उसकी तुरन्त ही चमड़ी उतर जाती है, वरना यह प्याला कैसे हजम होता? पर श्री राजजी महाराज अपनी शरण में रखकर मेहर करते हैं।

ए प्याला कोई न पी सके, जुबां लगते मुरदा होए।
पर हक राखत हैं जीव को, ना तो याकी खैंच काढ़े खुसबोए।। ९० ।।

इस इश्क के प्याले को कोई संसारी जीव नहीं पी सकता। इसके जबान से लगते ही मर जाते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज ही इन्हें जिन्दा रखते हैं, वरना इश्क की खुशबू ही जीव को संसार छुड़ा दे।

प्याले पर प्याले पिलावहीं, ताकी निस दिन रहे खुमार।
देवे तवाफ निस दिन, हुकम मेहेर को नहीं सुमार।। ९१ ।।

रूहों को इश्क के प्याले पर प्याले पिलाते हैं, ताकि श्री राजजी का नशा सदा बना रहे और रात-दिन वह इसी के चक्कर लगाती रहें, क्योंकि श्री राजजी का हुकम और मेहर बेशुमार है।

बड़ा अचरज इन हुकम का, मुरदे राखत जिवाए।
मौत सरबत निस दिन पीवै, सो मुरदे रखे क्यों जाए।। ९२ ।।

हुकम की यह हिकमत बड़ी हैरानी वाली है। यह मोमिनों के मुर्दा तनों को जिन्दा रखता है। जो मोमिन रात-दिन मौत के ही शर्बत पीते हैं, वह जीवित कैसे रहते हैं? अर्थात् क्यों खड़े हैं।

हुकम मुरदों बोलावत, और ऐसी देत अकल।
करत नजीकी हक के, मुरदे कहावें अर्स दिल।। ९३ ।।

हुकम से रूहों के मुर्दा तन बोलते हैं और हुकम ही उन्हें अकल देकर श्री राजजी के नजदीक ले जाता है। तभी मोमिनों के मुर्दा तन श्री राजजी महाराज के अर्श दिल कहलाते हैं।

हुकम लाख विधों जतन करे, हर रूहों ऊपर सबन।
हुकम जतन तो जानिंए, जो याद आवे अर्स वतन।। ९४ ।।

हुकम लाखों तरीके से हर रूह के ऊपर यत्न करता है, जिसे तब जाना जाए जब अपने अखण्ड घर परमधाम की याद आए।

जो पेहेले आप मुरदे हुए, तो दुनियां करी मुरदार।
हक तरफ हुए जीवते, उड़ पोहोंचे नूर के पार।। ९५ ।।

यदि पहले मोमिन मुर्दे के समान हो गए, तो बाद में दुनियां को भी मुर्दा समझकर छोड़ा। जब श्री राजजी का ज्ञान लेकर खड़े हुए, तो तुरन्त अक्षर के पार परमधाम पहुंच गए।

Nijanand App

दुनियां इस्क न ईमान, क्यों उड़या जाए बिना पर।
तो दुनी कही जिमी नासूती, रूहें आसमानी जानवर।। ९६ ।।

दुनियां वालों के पास न इश्क है न ईमान, तो वह बिना पर के कैसे उड़ सकते हैं? इसलिए दुनियां वालों को मृत्युलोक का कहा है और रूहों को आसमान में उड़ने वाला कहा है।

ए दुनियां जो खेल की, छोड़ सुरिया आगे ना चलत।
सो कायम फना क्या जानहीं, जाकी पैदास कही जुलमत।। ९७ ।।

यह झूठे खेल की दुनियां सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को छोड़कर आगे नहीं चलती। यह अखण्ड और नाशवान के भेद को कैसे समझे, जो निराकार से पैदा है।

महामत कहे ए मोमिनों, बका हासिल अर्स रूहन।
कह्या दिल जिनों का अर्स बका, ए मोमिन असल अर्स में तन।। ९८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! परमधाम की रूहों को अपना अखण्ड घर प्राप्त है। जिनके दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, उन मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ १८५० ॥

मोमिनों की सरियत, हकीकत, मारफत इस्क रब्द का प्रकरण

इस्क रब्द खिलवत में, हुआ हक हादी रूहों सों।
सबों ज्यादा इस्क कह्या अपना, तो तिलसम देखाया रूहों कों।। १ ।।

मूल-मिलावा (परमधाम) में श्री राजश्यामाजी और सखियों के बीच इश्क का वार्तालाप हुआ। सभी ने अपने इश्क को ज्यादा कहा, इसलिए इश्क के विवरण के लिए रूहों को यह तिलसम का खेल दिखाया।

तिन फरेब में रल गैयां, जित पाइए ना इस्क हक।
कहें हक मोहे तब पाओगे, जब ल्योगे मेरा इस्क।। २ ।।

ऐसे माया के झूठे संसार में आकर रूहें भी हिल-मिल गईं, जहां श्री राजजी महाराज का इश्क नहीं है। श्री राजजी महाराज ने कहा कि अब तुम मुझे तब पाओगे, जब मेरे इश्क को लोगे।

यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार।
रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार।। ३ ।।

इस तरह से रूहों को श्री राजजी ने खेल में छिपा दिया (भुला दिया) और अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर जगा दिया। इश्क के वास्ते ही वार्तालाप किया था। अब श्री राजजी कहते हैं कि अपने इश्क को लो और मेरे पास आ जाओ।

मोमिन हक को जानत, नजीक बैठे हैं इत।
हक कदम हमारे हाथ में, पर हम नजरों ना देखत।। ४ ।।

मोमिन जानते हैं कि श्री राजजी महाराज हमारे पास बैठे हैं। उनके चरण हमारे हाथ में हैं, पर हम अपनी नजर से उन्हें देख नहीं सकते।

Nijanand App